بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 14.10.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

यदि हमने बैअत का हक़ अदा करना है, यदि हमने अल्लाह तआला के उपकारों पर उसका आभारी होना है तो हमें हर समय अपनी हालतों का निरीक्षण करने की आवश्यकता है।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 14 अक्तूबर 2022, स्थान मस्जिद बतरहमान, मरो लड, अमरीका।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला का सबसे बड़ा उपकार जो उसने हम पर किया है वह यह है कि उसने हमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। इस उपकार पर वास्तविक आभार यह है कि हम अल्लाह तआला के आदेशानुसार चलें। अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रयत्न शील रहें। यह तब ही सम्भव है जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलै. की बैअत का हक़ अदा करने का प्रयास करें। हमें वास्तविक मुसलमान बनने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलै. की ओर देखना होगा, आप अलै. के बताए हुए मार्ग के अनुकूल अपन जीवन को ढालना होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. अपने ऊपर सम्पूर्ण विश्वास तथा ईमान की नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति ईमान लाता है उसे अपने ईमान से विश्वास तथा विवेक की ओर प्रगति करनी चाहिए, न यह कि फिर वह आशंका में लिप्त हो। फ़रमाया- अब तुम स्वयं सोच लो तथा अपने दिलों में निश्चय कर लो कि क्या तुमने मेरे हाथ पर जो बैअत की है और मुझे मसीह मौऊद तथा अन्तिम निर्णायक एवं सम्पूर्ण न्याय संगत माना है तो इस मानने के बाद मेरे किसी कार्य तथा निर्णय पर यदि दिल में कोई शंका अथवा शोक हाता है तो अपने ईमान की चिंता करो। जिसने मुझे स्वीकार किया है और फिर भी आलोचना करता है तो वह और भी भाग्य हीन ह कि देख कर भी अंधा हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. और आप अलै. से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम ने आप अलै. के बाद ख़िलाफ़त की शुभ सूचना दी थी। अहमदिया ख़िलाफ़त हज़रत मसीह मौऊद अलै. के तरीक़े को ही जारी रखने वाला निज़ाम है। अपने संकल्प में हर एक अहमदी अहमदिया ख़िलाफ़त से जोड़ तथा आज्ञा पालन का संकल्प करता है। इस दृष्टि से ख़िलाफ़त के साथ जुड़ने के संकल्प को निभाना हर अहमदी का कर्त्तव्य है, अन्यथा बैअत अधूरी है।

क़ुर्आन करीम को ध्यान पूर्वक पढ़ने की ओर ध्यान दिलाते हुए हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं कि मैं बार बार इस बात की ओर उन लोगों को जो मेरे साथ सम्बंध रखते हैं, नसीहत करता हूँ कि ख़ुदा तआला ने इस सिलसिले को यथार्थ के दर्शन हेतु स्थापित किया है। मैं चाहता हूँ कि क्रिया शील सच्चाई के द्वारा इस्लाम की सुन्दरता दुनिया पर प्रकट हो जैसा कि ख़ुदा ने मुझे इस काम के लिए नियुक्त किया है इस लिए क़ुर्आन शरीफ़ का अधिकाधिक पढ़ो किन्तु केवल कथा समझ कर नहीं बल्कि एक दर्शन शास्त्र समझ कर पढ़ो। यदि हम दुनिया की व्यस्तता में लिप्त हो गए तो हमारी संतानें तथा पीढ़ियाँ दीन से दूर होती चली जाएँगी। अतएव ये बड़ी सोचने की बातें हैं। याद रखें कि केवल बैअत करने से लक्ष्य पूरा नहीं होता, लक्ष्य तब ही पूरा होगा जब हम स्वयं को इस्लाम की शिक्षा से सुशोभित करेंगे और यह उस समय तक नहीं हो सकता जब तक हम क़ुर्आन करीम को पढ़ें तथा इस पर अमल न करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि सच्ची बात यही है कि तुम उस स्रोत के अति निकट आ पहुंचे हो जो इस समय ख़ुदा तआला ने अनन्त जीवन के लिए पैदा किया है। हाँ, पानी पीना अभी शेष है, अतः ख़ुदा तआला की कृपा तथा दया से सामर्थ्य चाहो कि वह तुम्हें सींचे, क्यूँकि ख़ुदा तआला के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। यह मैं निश्चित ही जानता हूँ कि जो इस स्रोत से पिएगा वह कदाचित नष्ट नहीं होगा क्यूँकि यह पानी जीवन प्रदान करता है। इस स्रोत से पानी लेने का क्या उपाय है, यही कि ख़ुदा तआला ने जो दो हक़ तुम पर क़ायम किए हैं उनको बहाल करो तथा पूरे तौर पर अदा करो, उनमें से एक ख़ुदा का हक़ है तथा दूसरा प्राणियों का।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि केवल बैअत करना पर्याप्त नहीं है, अल्लाह तआला अमल चाहता है, जो अमल करेगा वह कभी नष्ट नहीं होगा तथा सदैव अल्लाह तआला के फ़ज़्ल पाता रहेगा। यह अमली अवस्था उस समय होगी जब ला इलाहा इल्लल्लाह तुम्हारे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष की आवाज़ बन जाए और तुम्हें अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अतिरक्त किसी चीज़ की आवश्यकता न हो। अल्लाह तआला के आदेशों का सम्पूर्ण पालन हो। अब हर एक इस बात से आत्म निरीक्षण कर सकता है कि जब हम कलिमा पढ़ते हैं तो क्या वास्तव में अल्लाह तआला की प्रसन्नता पाना हमारा उद्देश्य है? क्या हम उसके आदेशों का पालन कर रहे हैं? यदि नमाज़ों के समय सांसारिक काम छोड़ कर नमाज़ पढ़ने की ओर हमारा ध्यान नहीं होता तो हम मुंह से तो कलिमा पढ़ रहे हैं परन्तु एक क्षणिक शिर्क हमारे दिल में है। एक मोमिन तो इस विश्वास पर क़ायम होता है कि मेरे व्यापार में तथा मेरे काम में बरकत अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ही पड़ती है, तो फिर यह कैसे हो सकता है कि मेरे सांसारिक काम अल्लाह तआला की आवाज़ का राकन क लिए खड़े हो जाएँ। यदि ऐसा है तो हमने कलिमे की रूह को समझा ही नहीं, हम मुंह से तो कलिमे को स्वीकार कर रहे हैं किन्तु हमारे कर्म हमारी स्वीकृति का साथ नहीं दे रहे। यदि यह स्थिति है तो बैअत का हक़ अदा नहीं हो रहा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जो बन्दों के अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया है, जब ये अदा होंगे तो फिर एक वास्तविक मोमिन बनता है और बैअत का हक़ अदा करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि यदि दुनियादारों की

भांति रहोगे तो कोई लाभ नहीं, मेरे हाथ पर तौबा करना एक मौत को चाहता है ताकि तुम एक और नया जीवन प्राप्त कर सको। यदि तुम्हें रूहानी जीवन नहीं मिलता तो फिर ऐसी बैअत कुछ लाभ नहीं देगी। मेरी बैअत से ख़ुदा दिल की स्वीकृति चाहता है, जो सच्चे दिल से मुझे स्वीकार करता है तथा अपने पापों से तौबा करता है तो ख़ुदा उसे क्षमा कर देता है तथा वह ऐसा हो जाता है जैसे माँ के पेट से निकला है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हमारी इबादतें शुद्ध एवं कर्म अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले हों। आजकल दुनिया के हालात से पता चलता है कि विनाश के बड़े भयानक बादल मंडला रहे हैं और जो विनाश होगा उसका परिणाम दुनिया की तबाही होगा। अतः अब अहमदियों का काम है कि दुआओं से काम लें। हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि नेक लोगों के कारण अल्लाह दूसरे लोगों को भी बचा लेता है। हम अति भयावह दौर से गुज़र रहे हैं यदि ऐसी अवस्था में कोई बचा सकता है तो वह अल्लाह तआला की ज़ात ही है। स्वयं भी तथा अपनी नस्लों को भी उसके आगे झुकने वाला बनाएँ ताकि स्वयं भी तथा अपनी पीढ़ियों को भी सुरक्षित कर सकें। यदि हम ला इलाहा इल्लल्लाह कलिमे का हक़ अदा करने वाले हों तो अल्लाह तआला हमारे नेक कर्मों के कारण दुनिया को भी बचा लेगा। इससे पहले कि विश्व के हालात सीमा से अधिक बिगड़ जाएँ, बहुत दुआएँ करें। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि नेकी वही है जो जटिल समय से पहले करे, यदि बाद में करे तो कुछ लाभ नहीं, नाव डूबती है तो सब रोते हैं, किन्तु रोना और चिल्लाना उस समय लाभकारी नहीं हो सकता जब नाव डूब रही हो, वह केवल उस समय लाभकारी है जब शांति और सुविधा की अवस्था हो। ख़ुदा को पाने का यही गुर है जब इंसान समय से पहले जाग जाए ऐसा मानो उस पर बिजली गिरने वाली है, परन्तु जो बिजली को गिरते देख कर चिल्लाता है कि उस पर गिरेगी तो वह बिजली से डरता है, न कि ख़ुदा से।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आज अहमदियों का ईमान और अल्लाह तआला से सम्बंध और दुआएँ ही विश्व को विनाश से बचा सकती हैं। दुनिया वालों से सहानुभूति पैदा करके दुनिया के लिए दुआएँ करें। यदि अल्लाह तथा उसके बन्दों की ओर ध्यान नहीं दिया तो यह दुनिया वीरानी में बदल सकती है, अतः हर अहमदी इस सोच के साथ अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करे। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि देखो तुम लोग कुछ परिश्रम करके खेत तय्यार करते हो तो लाभ की आशा होती है तो इसी तरह शांति के दिन परिश्रम के लिए हैं अब ख़ुदा को याद करोगे तो हितकारी होगा, अब यदि दुआएँ करोगे तो वह रहीम व करीम ख़ुदा अपनी कृपा करेगा। नमाज़ों में, रकूअ में, सजदे में दुआएँ करो कि अल्लाह तआला इस बला को फेर दे तथा प्रकोप से सुरक्षित कर दे। जो दुआ करता है वह वंचित नहीं रहता। यह सम्भव नहीं कि दुआ करने वाला मारा जाए यदि ऐसा हो तो ख़ुदा कभी न पहचाना जाए। अर्थात ऐसा ही करो कि सम्पूर्ण रूप में तुममें सच्ची निष्ठा पैदा हो जाए। आज भी ऐसे ही विनाश की सम्भावना दिखाई दे रही है इस लिए हम अल्लाह तआला के समक्ष झुकें क्यूँकि यही उपाय दुनिया को सुरक्षित रखने का है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि उच्च आचरण दिखाना भी अल्लाह तआला के आदेशों में से एक आदेश है। फ़रमाया कि ज़बान की अशिष्टता शत्रुता डाल देती है इस लिए अपनी ज़बान को सदैव वश में रखना चाहिए। इस्लाम जहाँ नैतिकता की परिधि में रहने की शिक्षा देता है वहाँ वैधानिक सीमाओं में भी रहने का आग्रह करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि एक और विशेषता जो अहमदियों में होनी चाहिए कि आपस में मुहब्बत तथा बन्धुत्व पैदा करो। फ़रमाया कि हमारी जमाअत में शामिल होकर हम एक आध्यात्मिक पिता की संतान बन गए हैं तथा किसी को किसी अन्य पर कोई प्रमुखता नहीं, और फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला हमारी जमाअत को एक नमूना बनाना चाहता है। अतएव क्या नमूना केवल ऊपरी बातों तथा बिना किसी शुद्ध कर्म के बन सकता है? इसके लिए तो अति संघर्ष एवं अति परिश्रम करना पड़ेगा। अपनी इबादतों के स्तर बुलन्द करते हुए अपनी नैतिक अवस्थाओं के स्तर ठीक करते हुए भी तथा आपस में मुहब्बत और भाईचारे के स्तर स्थापित करते हुए हमें देखना होगा कि हम वे नमूने बन रहे हैं अथवा नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी को प्यार करता है। अल्लाह तआला के विराट अस्तित्व को याद करके सब डरते रहो अर्थात अल्लाह तआला का भय तथा उसके नाराज़ होने की चिंता दिल में पैदा करो। याद रखो कि सब अल्लाह तआला के बन्दे हैं, किसी पर अत्याचार न करो, किसी को हीन दृष्टि से न देखो। यदि एक आदमी गंदा होता है तो वह सबको गंदा कर देता है। उच्च स्तर को मान्यताए तथा उच्च कोटि के शिष्टाचार उस समय पैदा होते हैं जब तक़्वा का स्तर उच्च कोटि का हो। हमारी जमाअत के लोग ऐसे बन्दे से सम्बंध रखते हैं जिसका वादा नियुक्त होने का है। हमारी जमाअत यह चिंता दुनिया से बढ़ कर अपनी जान पर लगाए कि उनमें तक़्वा है कि नहीं। अतः यदि हमने बैअत का हक़ अदा करना है, यदि हमने अल्लाह तआला के उपकारों पर उसका आभारी होना है तो हमें हर समय अपनी हालतों का निरीक्षण करने की आवश्यकता है।

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. की अभिलाषा के अनुसार अपने जीवन को ढालने वाले हों। हम दीन को दुनिया पर प्रमुखता देने वाले हों। अल्लाह तआला का भय हमारे अन्दर पैदा हो जाए और हम वास्तव में अशहदु अल्ला इलाहा का हक़ अदा करने वाले बनें और हम आख़िरीन की उस जमाअत में शामिल हो जाएँ जिसकी ख़ुश ख़बरी अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम को प्रदान की थी। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131